International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 27-09-2025, Accepted: 27-10-2025, Published: 11-11-2025
Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 72-73

कार्यशील महिलाऐं एवं सामाजिक यथार्थ

नागेश्वरी कुमारी[1], डॉ. रश्मि[2]
[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत
[2] प्रोफ़ेसर, समाजशास्त्र विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

सारांश
भारतीय समाज धर्म प्रधान समाज रहा है, जहां कि जीवन का हर पक्ष किसी न किसी रुप में धर्म द्वारा परिभाषित एवं नियंत्रित रहा है। अतः भारतीय संदर्भ में नारी भी अपने विभिन्न रुपों में (पुत्री, पत्नी, मां, बहन आदि में) धर्म से परिबद्ध रही है। नारी की पूर्णतया का प्रमुख आधार विवाह माना गया, जिसे की भारतीय संस्कृति में जन्म–जन्मांतर का रिश्ता, धार्मिक संस्कार एवं अटूट बंधन माना गया। इन्हीं धारणाओं एवं विश्वासों के फलस्वरुप वैवाहिक संबंधों में किसी भी असामंजस्य परिस्थितियों को भी बिना किसी शिकायत की सहन किया गया। चूकी परंपरागत रूप में पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था थी। किंतु समकालीन भारतीय समाज में परिवर्तन की आधुनिक प्रक्रियाओं, औद्योगिकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, लौकिकीकरण व भौतिकवादी विचारधारा ने महिलाओं को कार्य– क्षेत्र में तो ला दिया।
लेकिन नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक आदर्शों तथा मूल्यों में उतनी तीव्रता से बदलाव न होने के फलस्वरुप पारिवारिक असंगतियां और तनाव तथा भूमिका संघर्ष उत्पन्न हो गए, जिसका गलत प्रभाव न केवल पारिवारिक सामंजस्य पर पड़ा बल्कि उनके कार्यकारी संबंध भी इससे प्रभावित हुए। अतः शोधकर्ता ने कार्यशील महिलाओं के कार्यकारी संबंधों और पारिवारिक असंगतियों के प्रभाव को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया है।

मुलशब्दः संस्कृति, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, पारिवारिक सामंजस्य, नगरीकरण, परिस्थितियां भूमिका, संघर्ष।

शिक्षित कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका से एक ओर पारिवारिक सामंजस्य विघटित हुआ है, तो दूसरी ओर पारिवारिक असंगतियों के परिणाम स्वरुप इनकी कार्यकारी भूमिकाएं प्रभावित हुई है। ज्यादातर कार्यशील महिलाएं यह स्वीकार करती है कि उनके द्वारा नौकरी करने से पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हुआ है और इस तनाव के परिणाम स्वरुप परिवार में विभिन्न असंगतियां उत्पन्न हुई है, अत्यधिक व्यस्तता के कारण बच्चों, पति एवं पारिवारिक सदस्यों के प्रति ध्यानस्थ न दिखा पाना, रिश्तेदारों के लिए समय न निकाल पाना एवं पारिवार को अधिक समय ना दे पाना आदि। इन असंगतियों से न केवल पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हुआ है, बल्कि इसका असर उनके कार्यकारी संबंधों पर भी पड़ता है क्योंकि जब परीवार के तनाव से मन अशान्त रहता है, तो व्यवसाय सम्बन्धी भुमिकाएं भी प्रभावित होती हैं। कार्यरत महिलाओं की गृहिणी की भूमिका में मां और व्यवसायी की भूमिका में काफी अंशो तक भूमिका तनाव व भूमिका संघर्ष उपस्थित हैं।
शोध के दौरान यह पाया गया कि इन महिलाओं ने केवल मात्र आर्थिक कारण से व्यवसाय को नहीं अपनाया बल्कि उच्च शिक्षा एवं अवकाश का समय सदुपयोग करने, विशेष स्तर बनाए रखने, पति की आय में वृद्धि के विचार से भी इन्होंने व्यवसाय अपनाया है। इनके विवाह के बाद कामकाजी बने रहने का कारण भी आर्थिक तंगी नहीं था बल्कि पति की एवं स्वयं भी इनके व्यवसाय एवं प्रगति में रुचि थी। अध्ययन के दौरान या पाया गया कि कार्यशील महिलाएं चाहे आर्थिक कारणों से नौकरी कर रही हो या स्वयं की इच्छा से, किंतु ज्यादातर महिलाएं कार्यकारी व व्यवसाय की भूमिका निर्वाह में कई कारणों से कहीं न कहीं संघर्ष अनुभव करती हैं किंतु फिर सभी महिलाएं पारिवारिक एवं व्यवसायिक सामंजस्य बनाए हुए हैं एवं उनके दांपत्य संबंधों पर प्रभाव नहीं पाते हैं क्योंकि ये सभी महिलाएं पति की सहमति से ही नौकरी करती हैं। इस सामंजस्य का एक कारण यह भी था कि ये महिलाएं स्वयं की इच्छा से नौकरी करती है, दबाव स्वरूप नहीं। कुछ महिलाओं पर आर्थिक दबाव पाया गया। पारिवारिक सामंजस्य में बच्चों की देखभाल, पति की देखभाल, घर का काम, व्यावसायिक प्रगति के प्रति आकांक्षा, विशेष स्तर से रहने की आकांक्षा, बच्चों के भविष्य के प्रति आकांक्षा आदि रूप में प्रकट होती है।
कार्यरत महिलाएं एवं उनके परिवारों का स्वरूप के बारे में अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्था में संरचनात्मक परिवर्तन आया है, एवं संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों की वृद्धि हुई है। किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं की एकल परिवार में एवं महिलाओं के व्यवसाय अपनाने में कार्य कारण संबंधित है। इस प्रवृत्ति हेतु विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सामयिक कारण उत्तरदाई है। यद्यपि कार्यशील महिलाओं के परिवारों में ऐसे आंतरिक स्थितियां उत्पन्न हो जाती है जो की एकाकी परिवारों की उत्पत्ति को प्रेरित करती है पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आने का अनेक कर्म में से एक कारण महिलाओं का व्यवसाय में आना है। परिवार में परंपरागत रूप से नरी से बहुमुखी दायित्वों की अपेक्षा की जाती है, किंतु कार्यशील महिलाओं को अपेक्षाकृत कम समय मिलने के कारण सभी से सहयोग की अपेक्षा रहती है। कार्यरत महिलाओं से यह प्रश्न किए जाने पर की क्या परिवार एवं कार्यालय की दोहरी भूमिकाएं निभाने से उनके अंदर संघर्ष की भावना उत्पन्न होती है। महिलाओं ने यह संघर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार के संघर्ष असामंजस्य का द्योतक है इसका प्रमुख कारण परिवार एवं समाज के सदस्यों का कार्यशील महिलाओं के समक्ष उत्पन्न समस्याओं का न समझा पाना है। प्राप्त आंकड़ों से सिद्ध होता है कि उन्ही महिलाओं के समक्ष दोहरी उत्तरदायित्व का संघर्ष अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है जिन्हें अतिरिक्त घर का भी पूरा उत्तरदायित्व संभालना पड़ता है एवं नौकरी के प्रति द्वैधवृति है। जो परिवार एवं व्यवसाय दोनों में पूरी निष्ठा चाहती है एवं महत्वाकांक्षी है। जितनी ज्यादा दोहरी उत्तरदायित्व होंगे उतनी ही अधिक संघर्ष में वृद्धि होगी। भारतीय परिप्रेक्ष्य में पली ये भारतीय महिलाएं कानूनी

तौर पर समानता का दर्जा रखती है किंतु इनकी मानवृति अभी भी परंपरागत है– पति सेवन का धर्म है एवं बच्चों को पालना परम कर्तव्य। अतः अधिकांश महिलाएं अभी भी कैरियर के प्रति उदासीन है एवं मानसिक कैद से पीड़ित होने के कारण स्वयं ही महिला संगठनों एवं व्यवसायिक संगठनों के प्रति उदासीन है।

इन महिलाओं से जब यह पूछा गया कि इसमें क्या सुझाव एवं समाधान हो सकते हैं जो इस भूमिका संघर्ष को समाप्त या कम किया जा सके, तो निम्न सुझाव पाए गए–

प्रथम सुझाव मनोवृति के स्तर पर परिवर्तन की आवश्यकता है। कामकाजी महिलाओं को समाज में उच्च दृष्टि से देखा जाना चाहिए एवं उनके पुरुष वर्ग के साथ काम करने के बारे में अश्लील, बेकार बातें नहीं करनी चाहिए। पुरुष वर्ग पूर्वाग्रह से मुक्त हो, उसे एक कर्मचारी के रूप में देखना चाहिए। इस विषय में डॉ. योगेंद्र सिंह के अध्ययन में पाया कि महिलाऐं पुरुषों की तुलना में अधिक आधुनिक है, और आधुनिक विचारों को ग्रहण करने में अधिक संवेदनशील है। अतः पुरुष वर्ग को अपने विचारों में बदलाव करके स्थिति के अनुरूप गृह कार्यों आदि में बराबर का सहयोग करना चाहिए तथा समान रूप से उत्तरदायित्व की भावना होनी चाहिए। घरेलू कामकाज के बारे में पति–पत्नी के बीच एक संयुक्त जिम्मेदारी की भावना और इन कार्यों को दोनों के लिए गरिमायुक्त और सामान्नीय समझने की भावना घर से ही केवल उपदेश के रूप में नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप में विकसित की जानी चाहिए।

स्त्रियों को वास्तव में शिक्षा, प्रशिक्षण, नौकरी सुरक्षा और कार्य के क्षेत्र में यदि आगे उन्नति के अवसर समान रूप से प्रदान किए जाएं और यदि उन्हें अपने दोनों कार्यों – कर्मचारि के रूप और पत्नी व माता के रूप में – अपने कर्तव्यों का बिना एक भूमिका के दूसरी भूमिका को प्रभावित किये हुए एक साथ और प्रभावशाली ढंग से पालन करने की सुविधाएं प्रदान की जाए तो स्त्रियां कहीं ज्यादा अच्छा और बड़ा योगदान कर सकती हैं। भारतीय समाज में स्त्रियां शिक्षा के सर्वोच्च स्तर तक पहुंच रही हैं, अतः परिवर्तन आना तो स्वाभाविक ही है। अब महिलाओं का दायरा मात्र घरेलू सीमा तक सीमित न रहकर बाहरी कार्यक्षेत्र में भी आगे आ रही है, जिस देश, राज्य व पारिवार की सामाजिक–आर्थिक प्रगति विकास में महिलाएं अपना योगदान दे रही हैं। कार्यशील में स्त्रियां समाज में तार्किक आधार पर अपना दृष्टिकोण व विचारधारा सशक्ता के साथ रखने में सक्षम है। घर व बाहर दोनों क्षेत्रों की जिम्मेदारियों को वह बखूबी निभा रही है। परंपरागत निर्धारित प्रतिमानों का खंडन करके वे न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुई है, एवं स्वयं के जीवन व पारिवारिक एवं बाह्य कार्यक्षेत्र के स्तर पर भी अपनी निर्णयात्मक भूमिका निभा रही है। कामकाजी महिलाओं में से ज्यादातर महिलाओं का मत है कि पारिवारिक कार्यों की समस्या का समाधान के लिए प्रत्येक स्तर पर जब तनाव उत्पन्न होता है एवं भूमिका संघर्ष को महसूस करती है तो अति आवश्यक कार्य को प्राथमिकता देकर भूमिका संघर्ष को दूर करती है। महिलाएं बाह्य कार्यक्षेत्र में कार्य कर रही है आय का अर्जन भी करती है। केवल आर्थिक रूप से ही सशक्त नहीं हो रही घर परिवार का आर्थिक सहारा भी बन रही है लेकिन इस बदलते युग के साथ पुरुष अभी भी परंपरावादी मानसिकता बनाए हुए है। अभी भी पुरुषवादी मानसिकता में परिवर्तन नहीं आया या बहुत मंद गति से बदलाव व रहा है। जिस कारण कार्यशील महिलाओं को घरेलू व बाह्य कार्यक्षेत्र दोनों स्तर पर अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए कई प्रकार से भूमिका संघर्षों का सामना करना पड़ता है। कार्यशील महिलाएं को न केवल मानसिक तनाव बल्कि शारीरिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है, जो प्रगतिशील समाज के लिए उचित नहीं है। अतःआवश्यकता इस बात की है कि इस नवीन उभरती व्यवस्था में नवीन विचारधाराओं एवं प्रतिमानों को भी अपनाया जाए, जो घरेलू स्तर पर लैंगिकता के भेद को समाप्त किया जा सके, एवं बाह्य कार्यक्षेत्रों में भी महिलाओं को पूर्ण सहयोग मिले। जिससे कामकाजी महिलाएं देश, राज्य, समाज, परिवार एवं व्यक्तिक स्तर पर वृद्धि में अपना पूर्ण सहभागिता प्रदान कर सकें।

निष्कर्ष

कार्यशील महिलाओं पर निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि समाज और अर्थव्यवस्था में उनका योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनकी भागीदारी न केवल परिवार के आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देती है। स्त्री का कार्यशील होना न केवल समय की मांग है वरन महिला सशक्तिकरण एवं स्वतंत्रता व आत्मनिर्भरता की दशा में एक ठोस कदम है। कार्यशील होने से महिला सामाजिक परिस्थिति में परिवर्तन आया है, फरिस्थिति परिवर्तन से भूमिका परिवर्तन स्वाभाविक है। कार्यशील महिलाएं समाज के विकास में अपना योगदान दे रही है, वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सहयोग कर रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bhandari, Mala (2004). Quality if life of Urban working women. Abhijeet publication, Delhi.
2. Davis Kingsley (1965). Human society. The Macmillan Co, New York.
3. https://www.catalyst.org/research/ women -in-the-workforce-india/
4. Lintan, Ralf (1947). Concept of Role & Status (ed.) Reading in social psychology, new comb & Hearly, New York.
5. Mathur, Deepa (1992). Women, family & work. Rawat publication, Jaipur.
6. Shafi Aneesa (2002). Working women in Kashmir problem & prospects. APH publishing corporation, New Delhi.
7. Singh, y.p. (2014). Women Entrepreneurship, challenges Facing women's Equality in the 21st century. Garima prakashan, Jaipur.
8. Singhal, Tara (2003). Women & Family. RBSA Publishers. Jaipur.
9. डॉ. शर्मा, डॉ. सुमित्रा (2022). कामकाजी महिलाओं की भूमिका के बदलते आयाम एवं उभरती चुनौतियां ISSN 0975 - 735X शोध दिशा UGC APPROVED CARELIST ED JOURNAL.
10. https://www.tribuneindia.com/news/nation/only - 29 - women-work force- in - organised - job - sector-317042.